"भारतीय रिज़र्व बैंक का इतिहास" के खंड IV के विमोचन-अवसर पर प्रधानमंत्री के विचार*

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह 17 अगस्त 2013 को नई दिल्ली में ''भारतीय रिज़र्व बैंक इतिहास'' के खंड IV का विमोचन करते हुए।

इस बात का उल्लेख करने की जरूरत नहीं कि रिज़र्व का इतिहास स्वतंत्रता से ही हमारे देश के विकास का इतिहास रहा है। रिज़र्व बैंक से देश गौरान्वित हुआ है। मौद्रिक-नीति को आकार देने में, ऋण-नीति की रूपरेखा तय करने में इसकी अहम् भूमिका रही है। जहां तक मुझे ज्ञात है, इसने, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को, ऋण प्रदान करने में भी अपनी छाप छोड़ी है।

रिज़र्व बैंक ने अत्यंत उत्कृष्ट रीति से देश की सेवा की है, लेकिन मेरी यह भी राय है कि उत्कृष्टतम कार्य किया जाना अभी शेष है।

डॉ. सुब्बा राव ने नीति-निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है, मेरे विचार में डॉ. रघुराम राजन अपने पूर्ववर्तियों के अनुभव को ध्यान में रखकर उन अत्यंत कठिन परिस्थितियों की कार्य शैली की रूपरेखा तय करेंगे जिनका सामना हमारी अर्थव्यवस्था कर रही है। वर्तमान स्थिति से हम कभी संतुष्ट नहीं हो सकते। जब मैं गवर्नर था तब मुझे इस बात की अधिक जानकारी नहीं थी कि मौद्रिक नीति किसके लिए है। यही कारण था कि मैंने स्वर्गीय प्रोफेसर चक्रवर्ती को एक ऐसी समिति की अध्यक्षता करने के लिए कहा जिसमें मौद्रिक नीति की कार्य-प्रणाली, उद्देश्य, साधनों एवं उपायों पर विचार किया गया हो। एक खास समय के लिए उनकी रिपोर्ट काफी असरदार रही। मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि अब समय आ गया है कि हम इन क्षेत्रों में से कुछ के बारे में पुनः विचार करें। ये क्षेत्र हैं : वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में राजकोषीय रूप से अवरुद्ध अर्थव्यवस्था में मौद्रिक नीति की संभावनाएं एवं उनकी सीमाएं। मेरी राय में यह एक विषय है। दूसरा विषय समष्टि -

* 17 अगस्त 2013 को नई दिल्ली में भारतीय रिज़र्व बैंक का इतिहास के खंड IV के विमोचन-अवसर पर भारत के प्रधान मंत्री, माननीय डॉ. मनमोहन सिंह के विचार।

आर्थिक नीति-निर्माण, उद्देश्य एवं लिखत हो सकता है। मेरा मानना है इन पर नए सिरे से सोचने की जरूरत है। मुझे पूरी उम्मीद है कि भावी गवर्नर, विशेषकर डॉ. रघुराम राजन, इनमें से कतिपय कठिन क्षेत्रों पर पुनः विचार करने का प्रयास करेंगे।

मैं आप सभी को धन्यवाद देता हूं। हम यह अपेक्षा करते हैं कि कम-से-कम संव्यवसाय से जुड़े लोगों में एक हद तक राष्ट्रीय सहमति बने, लेकिन इसके लिए शर्त यह है कि भारत - जैसे देश की विशालता, विविधता एवं जटिलता को देखते हुए हमें सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन करने होंगे।

जैसाकि मैंने पहले ही कहा है कि रिज़र्व बैंक ने देश की बहुत अच्छी सेवा की है, किंतु मैं यह भी सोचता हूं अभी उसे सर्वोत्तम सेवा करनी है।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं डॉ. सुब्बाराव को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने रिज़र्व बैंक तथा देश की बड़ी निष्ठापूर्वक सेवा की है। मैं उनके उत्तराधिकारी, डॉ. रघुराम राजन का हार्दिक स्वागत करता हूं। वे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के एक जाने-माने अर्थशास्त्री हैं। मैं तहे दिल से उम्मीद करता हूं कि उनके गवर्नर काल में भारतीय रिज़र्व बैंक के लिए और शानदार समय आएगा।